**06-05-2024**

**अमन यात्रा**

# विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर ने किया पौधरोपण

## निदेशक डॉक्टर सीमा परोहा ने कहा-मानसून पूर्व वृक्षारोपण हमारी प्राथमिकता

सुशील त्रिवेदी

कानपुर देहात। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में दि. 05.6.2024 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संस्थान कर्मियों द्वारा प्रकृति से निःशुल्क रूप से प्रदत्त पर्यावरण के प्रमुख संघटक पेड़ों के संरक्षण और संवर्धन का संकल्प लेते हुये संस्थान की निदेशक,प्रो. (डॉक्टर) सीमा परोहा की अगुआई में व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण किया गया। प्रो. सीमा परोहा ने बताया कि संस्थान परिसर में जिन स्थानों पर पेड़ों की मात्रा कम है उनको चिन्हित कर लिया गया है और मानसून से पूर्व वहां पर वृहद रूप से पेड़ लगाना हमारी प्राथमिकता है। वृक्षारोपण के लिये विभिन्न प्रजातियों के पेड़ डॉ.लोकेश बाबर, कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि रसायन) द्वारा उपलब्ध करवाये गये।

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर स्पेंटवाश ड्राई और पोटाश डिराइव्ड मोलासेस इकाई का उद्घाटन करते हुये प्रो. सीमा परोहा ने कहा कि देश में उर्वरकों की खपत अधिक और उत्पादन बहुत कम है। भारत में सालाना उपयोग किये जाने वाले उर्वरक की मात्रा वैश्विक उपयोग का केवल 16.1 त है। देश के किसानों को प्रमुख पोषक तत्वों की कमी यथा-नाइट्रोजन 25त, फास्फोरस 90त और पोटेशियम का 100त आयात करना पड़ता है। जिसमें बहुमूल्य विदेशी मुद्रा व्यय होती है। हम विश्व में सबसे बड़े उर्वरक आयातक है। भारत सरकार किसानों के लिये उर्वरकों की दर कम रखने के लिये बड़ी मात्रा में सब्सिडी प्रदान करती है। वित्तीय वर्ष 2023-24 मेंमें सब्सिडी प्रदान करती हेत सरकार किसानों के लिये उ वल्ल 16.1 किसानों की उर्वरकों की मांग को पूरा करने के लिये सरकार ने उर्वरक सब्सिडी के लिये लगभग 21.5 बिलियन डॉलर रुपये आवंटित किये थे।

इकाई की कार्यप्रणाली पर विस्तृत प्रकाश डालते हुयेकार्यप्रणाली पर विस्तृत प्रकाश डॉलपेड़ डॉ.लोकेश बाबर, कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि रसायन) द्वारा उपलब्ध करवाये गये डॉ.अशोक यादव, सहायक आचार्य कृषि रसायन ने कहा कि पोषक तत्वों से भरपूर स्पेंटवाश ड्राई पावडर, पोटाश डिराइव्ड मोलासेस एवं सी.बी.जी. (कंप्रेस्ड बायो गैस) बनने के उपरांत प्राप्त द्रव खाद व फर्मेंटेड आर्गेनिक खाद के अन्य आवश्यक पोषक तत्वों को मिलाकर आवश्यकतानुसारउर्वरक तैयार करने की प्रायोगिक इकाई की स्थापना से उर्वरक उत्पादन के नये अवसर तैयार होंगे। इस प्रक्रिया में जैविक रूप से रसायन रहित वर्मी कंपोस्ट एवं कंपोस्ट का भी उत्पादन संभव होगा। संस्थान में विभिन्न चरणों में परीक्षण के उपरांत इन उर्वरकों का संस्थान के फार्म हाउस में परीक्षण होगा। इसके पश्चात विस्तृत रूप से किसानों के इस्तेमाल हेतु फैक्ट्रियों को तकनीक स्थानांतरित की जायेगी। यह कार्य उर्वरकों के क्षेत्र में गेम चेंजर होगा और इससे उर्वरकों की गुणवत्ता बढ़ेगी और लागत में कमी आयेगी।

निदेशक महोदया ने बताया कि भविष्य में हमारी योजनानुसार परीक्षण के उपरांत उसमें जिस पोषक तत्व की कमी होगी उसके अनुरूप जैविक खाद तैयार करने की भी है। चीनी मिलों से तैयार स्पेंटवाश ड्राई, पोटाश डिराइव्ड मोलासेस और सी.बी.जी. से तैयार उत्पाद आत्मनिर्भर भारत की ओर एक महत्वाकांक्षी कदम है जो किसान भाइयों को कम लागत में अधिक पोषक तत्वों के प्रयोग को बढ़ावा देता है। इस दिशा में चीनी मिलों से संस्थान को कई प्रोजेक्ट मिले हैं जिन पर तेजी से कार्य हो रहा है। इसके पूर्ण होने पर चीनी मिलों को भी अतिरिक्त राजस्व की प्राप्ति होगी।

वक्ताओं और श्रोताओं का आभार प्रकट करते हुये श्रीमती मल्लिका द्विवेदी, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने सभी को सेमिनार में भागीदारी के लिये धन्यवाद ज्ञापित किया। वहीं दूसरी ओर जिला कारागार कानपुर देहात में भी फलदार पौधे लगाए गए। इस अवसर पर कारागार अधीक्षक धीरज कुमार मिश्रा,जेलर डॉक्टर विनय कुमार पांडेय, डिप्टी जेलर शिवाजी सिंह,राम दास,राजेश कुमार, इजहार अहमद, कुमारी विजयलक्ष्मी के अतिरिक्त बन्दी रक्षकों में करणवीर सिंह, अशोक मिश्रा,ललित कुमार, अतुल यादव आदि ने कारागार परिसर में पीपल,कटहल,आम,नीम के पौधे लगाए गए।

**दीनार टाइम्स**





# देश में उर्वरकों की खपत अधिक और उत्पादन बहुत कम

डीटीएनएन | कानपुर

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान,विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संस्थान कर्मियों द्वारा प्रकृति से निःशुल्क रूप से प्रदत्त पर्यावरण के प्रमुख संघटक पेड़ों के संरक्षण और संवर्धन का संकल्प लेते हुये संस्थान की निदेशक,प्रो. (डॉक्टर) सीमा परोहा की अगुआई में व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण किया गया। प्रो. सीमा परोहा ने बताया कि संस्थान परिसर में जिन स्थानों पर पेड़ों की मात्रा कम है उनको चिन्हित कर लिया गया है और मानसून से पूर्व वहां पर वृहद रूप से पेड़ लगाना हमारी प्राथमिकता है। वृक्षारोपण के लिये विभिन्न प्रजातियों के पेड़ डॉ.लोकेश बाबर, कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि रसायन) द्वारा उपलब्ध करवाये गये।

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर स्पेंटवाश ड्राई और पोटाश डिराइव्ड मोलासेस इकाई का उद्घाटन करते हुये प्रो. सीमा परोहा ने कहा कि देश में उर्वरकों की खपत अधिक और उत्पादन बहुत कम है। भारत में सालाना उपयोग किये जाने वाले उर्वरक की मात्रा वैश्विक उपयोग का केवल 16.1 त है। देश के किसानों को प्रमुख पोषक तत्वों की कमी यथा-नाइट्रोजन 25त, फास्फोरस 90त और पोटेशियम का 100त आयात करना पड़ता है। जिसमें बहुमूल्य विदेशी मुद्रा व्यय होती है। हम विश्व में सबसे बड़े उर्वरक आयातक हैं। भारत सरकार किसानों के लिये उर्वरकों की दर कम रखने के लिये बड़ी मात्रा में सब्सिडी प्रदान करती है। वित्तीय वर्ष 2023-24 मेंमें सब्सिडी प्रदान करती हेत सरकार किसानों के लिये उ'वल्ल 16.1 किसानों की उर्वरकों की मांग को पूरा करने के लिये सरकार ने उर्वरक सब्सिडी के लिये लगभग 21.5 बिलियन डॉलर रुपये आवंटित किये थे।

इकाई की कार्यप्रणाली पर विस्तृत प्रकाश डालते हुयेकार्यप्रणाली पर विस्तृत प्रकाश डॉलपेड़ डॉ.लोकेश बाबर, कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि रसायन) द्वारा उपलब्ध करवाये गये डॉ.अशोक यादव, सहायक आचार्य कृषि रसायन ने कहा कि पोषक तत्वों से भरपूर स्पेंटवाश ड्राई पावडर, पोटाश डिराइव्ड मोलासेस एवं सी.बी.जी. (कंप्रेस्ड बायो गैस) बनने के उपरांत प्राप्त द्रव खाद (स्लरी) व फर्मेंटेड आर्गेनिक खाद (सहस्र) के अन्य आवश्यक पोषक तत्वों को मिलाकर आवश्यकतानुसारउर्वरक तैयार करने की प्रायोगिक इकाई की स्थापना से उर्वरक उत्पादन के नये अवसर तैयार होंगें। इस प्रक्रिया में जैविक रूप से रसायन रहित वर्मी कंपोस्ट एवं कंपोस्ट का भी उत्पादन संभव होगा। संस्थान में विभिन्न चरणों में परीक्षण के उपरांत इन उर्वरकों का संस्थान के फार्म हाउस में परीक्षण होगा। इसके पश्चात विस्तृत रूप से किसानों के इस्तेमाल हेतु फैक्ट्रियों को तकनीक स्थानांतरित की जायेगी। यह कार्य उर्वरकों के क्षेत्र में गेम चेंजर होगा और इससे उर्वरकों की गुणवत्ता बढ़ेगी और लागत में कमी आयेगी। निदेशक ने बताया कि भविष्य में हमारी योजनानुसार परीक्षण के उपरांत उसमें जिस पोषक तत्व की कमी होगी उसके अनुरूप जैविक खाद तैयार करने की भी है। चीनी मिलों से तैयार स्पेंटवाश ड्राई, पोटाश डिराइव्ड मोलासेस और सी.बी.जी. से तैयार उत्पाद आत्मनिर्भर भारत की ओर एक महत्वाकांक्षी कदम है जो किसान भाइयों को कम लागत में अधिक पोषक तत्वों के प्रयोग को बढ़ावा देता है। इस दिशा में चीनी मिलों से संस्थान को कई प्रोजेक्ट मिले हैं जिन पर तेजी से कार्य हो रहा है। इसके पूर्ण होने पर चीनी मिलों को भी अतिरिक्त राजस्व की प्राप्ति होगी। वक्ताओं और श्रोताओं का आभार प्रकट करते हुये श्रीमती मल्लिका द्विवेदी, सहायक निदेशक (रा. भा.) ने सभी को सेमिनार में भागीदारी के लिये धन्यवाद ज्ञापित किया।

## दैनिक जागरण

# एन एस आई निदेशक ने परिसर में रोपे पौधे

दैनिक कानपुर उजाला

एन एस आई परिसर में वृक्षारोपण करती निदेशक व अधिकारी।

**कानपुर।** राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संस्थान कर्मियों द्वारा प्रकृति से निःशुल्क रूप से प्रदत्त पर्यावरण के प्रमुख संघटक पेड़ों के संरक्षण और संवर्धन का संकल्प लेते हुये संस्थान की निदेशक,प्रो. (डॉक्टर) सीमा परोहा की अगुआई में व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण किया गया। प्रो. सीमा परोहा ने बताया कि संस्थान परिसर में जिन स्थानों पर पेड़ों की मात्रा कम है उनको चिन्हित कर लिया गया है और मानसून से पूर्व वहां पर वृहद रूप से पेड लगाना हमारी प्राथमिकता है। वृक्षारोपण के लिये विभिन्न प्रजातियों के पेड़ डॉ.लोकेश बाबर, कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि रसायन) द्वारा उपलब्ध करवाये गये। इस अवसर पर स्पेंटवाश ड्राई और पोटाश डिराइव्ड मोलासेस इकाई का उद्घाटन करते हुये प्रो. सीमा परोहा ने कहा कि देश में उर्वरकों की खपत अधिक और उत्पादन बहुत कम है।

## The Pioneer

# Country's fertiliser consumption high: Paroha

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

NSI Director Prof Seema Paroha felicitating an employee on World Environment Day.

The National Sugar Institute (NSI) inaugurated the spent wash dry and potash derived molasses unit on World Environment Day on Wednesday. Director Prof Seema Paroha stated that the country's fertiliser consumption is high while production is very low. The annual fertiliser usage in India accounts for only 16.1 per cent of global usage. Indian farmers have to import 25 per cent of nitrogen, 90 per cent of phosphorus and 100 per cent of potassium, resulting in a significant expenditure of valuable foreign currency. India is the world's largest importer of fertilisers. The Indian government provides substantial subsidies to keep fertiliser prices low for farmers. For the fiscal year 2023-24, the government allocated approximately 21.5 billion dollars for fertiliser subsidies to meet farmers' demands. Dr Ashok Yadav, Assistant Professor of Agriculture Chemistry, elaborated on the unit's operation, explaining that the experimental unit for fertiliser production combines nutrient-rich spent wash dry powder, potash-derived molasses, and liquid manure (LM) and fermented organic manure (FOM) obtained after producing compressed biogas (CBG) to prepare fertilisers as needed. This process also enables the production of organic, chemical-free vermi-compost and compost. After various stages of testing at the institute, these fertilisers will be tested on the institute's farm. Subsequently, the technology will be transferred to factories for extensive use by farmers. This initiative will be a game changer in the fertiliser sector, improving fertiliser quality and reducing costs. The director mentioned that future plans include preparing organic fertilisers based on soil testing to address specific nutrient deficiencies. Products prepared from spent wash dry, potash-derived molasses and CBG from sugar mills are a significant step towards self-reliant India, promoting the use of more nutrients at a lower cost for farmers. The institute has received several projects from sugar mills in this regard which are progressing rapidly. Upon completion, sugar mills will also benefit from additional revenue. Expressing gratitude to the speakers and audience, Assistant Director (OL) Mallika Dwivedi thanked everyone for their participation in the program. Earlier, extensive tree plantation was carried out at the NSI under the leadership of the Director Prof Seema Paroha. The staff resolved to protect and enhance the key environmental component provided freely by nature - trees. Prof Seema Paroha mentioned that areas within the institute's campus with fewer trees have been identified and planting trees on a large scale in these areas before the monsoon is our priority. Various species of trees were provided for plantation by Dr Lokesh Babar, Junior Scientific Officer (Agricultural Chemistry).

**CELEBRATED:** The World Environment Day was celebrated at Kendriya Vidyalaya IIT Kanpur. Principal Ravish Chandra Pandey along with teachers and students planting saplings of mango tree and Ashok tree. The programme started with the nature walk. Programme coordinator Ekta Sharma explained the importance of tree plantation and informed that various activities will be organised till June 15 under a programme 'Mission LiFE.. Priyanka Tewari, Punam Shukla, Bharti Mishra and SK Dwivedi planted saplings.

## राष्ट्रिय सहारा

# पौधरोपण कर बचायें पर्यावरण

## प्रकृति से निःशुल्क मिले पेड़ों के संरक्षण व संवर्धन का संकल्प

[illegible]

शर्करा संस्थान में पर्यावरण दिवस पर किया गया कार्यक्रम का आयोजन

स्पेंटवाश ड्राई व पोटाश डिराइव्ड मोलासेस इकाई का भी हुआ उद्घाटन

[illegible]

सीएसए ने किया 'हमारी भूमि हमारा भविष्य' पर कार्यशाला का आयोजन

## आज

# पौधरोपण के साथ पेड़ों की महत्ता पर प्रकाश डाला

(आज समाचार सेवा)

कानपुर, 5 जून। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संस्थान कर्मियों से प्रकृति से निःशुल्क रूप से प्रदत्त पर्यावरण के प्रमुख संघटक पेड़ों के संरक्षण और संवर्धन का संकल्प लेते हुये संस्थान की निदेशक प्रो. (डॉक्टर) सीमा परोहा की अगुआई में व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण किया गया। निदेशक ने बताया कि संस्थान परिसर में जिन स्थानों पर पेड़ों की मात्रा कम है उनको चिन्हित कर लिया गया है और मानसून से पूर्व वहां पर वृहद रूप से पेड़ लगाना हमारी प्राथमिकता है। वृक्षारोपण के लिये विभिन्न प्रजातियों के पेड़ डॉ.लोकेश बाबर, कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि रसायन) द्वारा उपलब्ध करवाये गये। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर स्पेंटवाश ड्राई और पोटाश डिराइव्ड मोलासेस इकाई का उद्घाटन करते हुये प्रो. सीमा परोहा ने कहा कि देश में उर्वरकों की खपत अधिक और उत्पादन बहुत कम है। भारत में सालाना उपयोग किये जाने वाले उर्वरक की मात्रा वैश्विक उपयोग का केवल 16.1 प्रतिशत है। देश के किसानों को प्रमुख पोषक तत्वों की कमी यथा-नाइट्रोजन 25 प्रतिशत, फास्फोरस 90 प्रतिशत और पोटैशियम का 100 प्रतिशत आयात करना पड़ता है। जिससे बहुमूल्य विदेशी मुद्रा व्यय होती है। डॉ.लोकेश बाबर व डॉ.अशोक यादव ने कहा कि पोषक तत्वों से भरपूर स्पेंटवाश ड्राई पावडर, पोटाश डिराइव्ड मोलासेस एवं सी.बी.जी. (कंप्रेस्ड बायो गैस) बनने के उपरांत प्राप्त द्रव खाद (एफ) व फर्मेंटेड आर्गेनिक खाद (एफओएम) के अन्य आवश्यक पोषक तत्वों को मिलाकर आवश्यकतानुसार उर्वरक तैयार करने की प्रायोगिक इकाई की स्थापना से उर्वरक उत्पादन के नये अवसर तैयार होंगे। इस प्रक्रिया में जैविक रूप से रसायन रहित वर्मी कंपोस्ट एवं कंपोस्ट का भी उत्पादन संभव होगा। इस दिशा में चीनी मिलों से संस्थान को कई प्रोजेक्ट मिले हैं जिन पर तेजी से कार्य हो रहा है। इसके पूर्ण होने पर चीनी मिलों को भी अतिरिक्त राजस्व की प्राप्ति होगी। श्रीमती मल्लिका द्विवेदी ने अतिथियों का आभार जताया।

कर्मचारी को उपहार देती निदेशक प्रो. सीमा परोहा।

## प्रयागराज / कन्नौज / उन्नाव

# राष्ट्रीय शर्करा संस्थान मे विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया

संवाददाता

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संस्थान कर्मियों द्वारा प्रकृति से निःशुल्क रूप से प्रदत्त पर्यावरण के प्रमुख संघटक पेड़ों के संरक्षण और संवर्धन का संकल्प लेते हुये संस्थान की निदेशक,प्रो. (डॉक्टर) सीमा परोहा की अगुआई में व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण किया गया। प्रो. सीमा परोहा ने बताया कि संस्थान परिसर में जिन स्थानों पर पेड़ों की मात्रा कम है उनको चिन्हित कर लिया गया है और मानसून से पूर्व वहां पर वृहद रूप से पेड लगाना हमारी प्राथमिकता है। वृक्षारोपण के लिये विभिन्न प्रजातियों के पेड़ डॉ.लोकेश बाबर, कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि रसायन) द्वारा उपलब्ध करवाये गये। विश्व पर्यावरण दिवस के

अवसर पर स्पेंटवाश ड्राई और पोटाश डिराइव्ड मोलासेस इकाई का उद्घाटन करते हुये प्रो. सीमा परोहा ने कहा कि देश में उर्वरकों की खपत अधिक और उत्पादन बहुत कम है। भारत में सालाना उपयोग किये जाने वाले उर्वरक की मात्रा वैश्विक उपयोग का केवल 16.1 प्रतिशत है। देश के किसानों को प्रमुख पोषक तत्वों की कमी यथा-नाइट्रोजन 25 प्रतिशत, फास्फोरस 90 प्रतिशत और पोटैशियम का 100 प्रतिशत आयात करना पड़ता है। जिसमें बहुमूल्य विदेशी मुद्रा व्यय होती है।

## सच का अहमियत

# राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में निदेशक डॉ सीमा परोहा की अगुवाई में हुआ वृहद वृक्षारोपण

पंकज अवस्थी, सच की अहमियत

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संस्थान कर्मियों द्वारा प्रकृति से निःशुल्क रूप से प्रदत्त पर्यावरण के प्रमुख संघटक पेड़ों के संरक्षण और संवर्धन का संकल्प लेते हुए संस्थान की निदेशक प्रोफेसर डॉक्टर सीमा परोहा की अगुवाई में व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण किया गया प्रोफेसर सीमा परोहा ने बताया कि संस्थान परिसर में जिन स्थानों पर पेड़ों की मात्रा कम है उनको चिन्हित कर लिया गया है और मानसून से पूर्व वहां पर वृहद रूप से पेड़ लगाना हमारी प्राथमिकता है वृक्षारोपण के लिये विभिन्न प्रजातियों के पेड़ डॉ.लोकेश बाबर, कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी कृषि रसायन द्वारा उपलब्ध करवाये गये विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर स्पेंटवाश ड्राई और पोटाश डिराइव्ड मोलासेस इकाई का उद्घाटन करते हुये प्रो. सीमा परोहा ने कहा कि देश में उर्वरकों की खपत अधिक और उत्पादन बहुत कम है भारत में सालाना उपयोग किये जाने वाले उर्वरक की मात्रा वैश्विक उपयोग का केवल 16.1 % है देश के किसानों को प्रमुख पोषक तत्वों की कमी यथा-नाइट्रोजन 25%, फास्फोरस 90% और पोटैशियम का 100% आयात करना पड़ता है जिसमें बहुमूल्य विदेशी मुद्रा व्यय होती है हम विश्व में सबसे बड़े उर्वरक आयातक हैं भारत सरकार किसानों के लिये उर्वरकों की दर कम रखने के लिये बड़ी मात्रा में सब्सिडी प्रदान करती है वित्तीय वर्ष 2023-24 मेंये सब्सिडी प्रदान करती हैत सरकार किसानों के लिये 16.1 किसानों की उर्वरकों की मांग को पूरा करने के लिये सरकार ने उर्वरक सब्सिडी के लिये लगभग 21.5 बिलियन डॉलर रूपये आवंटित किये थे

इकाई की कार्यप्रणाली पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए कार्य-प्रणाली पर विस्तृत प्रकाश डाला, डॉ.लोकेश बाबर कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि रसायन) द्वारा उपलब्ध करवाये गये डॉ.अशोक यादव, सहायक आचार्य कृषि रसायन ने कहा कि पोषक तत्वों से भरपूर स्पेंट वाश ड्राई पावडर, पोटाश डिराइव्ड मोलासेस एवं सीबीजी (कंप्रेस्ड बायो गैस) बनने के उपरांत प्राप्त द्रव खाद व फर्मेंटेड आर्गेनिक खाद के अन्य आवश्यक पोषक तत्वों को मिलाकर आवश्यकता अनुसार उर्वरक तैयार करने की प्रायोगिक इकाई की स्थापना से उर्वरक उत्पादन के नये अवसर तैयार होंगे इस प्रक्रिया में जैविक रूप से रसायन रहित वर्मी कंपोस्ट एवं कंपोस्ट का भी उत्पादन संभव होगा संस्थान में विभिन्न चरणों में परीक्षण के उपरांत इन उर्वरकों का संस्थान के फार्म हाउस में परीक्षण होगा इसके पश्चात विस्तृत रूप से किसानों के इस्तेमाल हेतु फैक्ट्रियों को तकनीक स्थानांतरित की जायेगी यह कार्य उर्वरकों के क्षेत्र में गेम चेंजर होगा और इससे उर्वरकों की गुणवत्ता बढ़ेगी और लागत में कमी आयेगी निदेशक ने बताया कि भविष्य में हमारी योजना मृदा परीक्षण के उपरांत उसमें जिस पोषक तत्व की कमी होगी उसके अनुरूप जैविक खाद तैयार करने की भी है चीनी मिलों से तैयार स्पेंटवाश ड्राई, पोटाश डिराइव्ड मोलासेस और सीबीजी से तैयार उत्पाद आत्मनिर्भर भारत की ओर एक महत्वाकांक्षी कदम है जो किसान भाइयों को कम लागत में अधिक पोषक तत्वों के प्रयोग को बढ़ावा देता है। इस दिशा में चीनी मिलों से संस्थान को कई प्रोजेक्ट मिले हैं जिन पर तेजी से कार्य हो रहा है इसके पूर्ण होने पर चीनी मिलों को भी अतिरिक्त राजस्व की प्राप्ति होगी वक्ताओं और श्रोताओं का आभार प्रकट करते हुए मल्लिका द्विवेदी, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने सभी को सेमिनार में भागीदारी के लिये धन्यवाद ज्ञापित किया।

## सत्य का असर

# सत्य का असर समाचार पत्र

06,06,2024 jksingh hardoi agmail com मोबाइल नंबर 9956834016

## कानपुर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संस्थान में कर्मियों द्वारा निदेशक,प्रो. (डॉक्टर) सीमा परोहा की अगुवाई में किया गया व्यापक वृक्षारोपण

**वरिष्ठ पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल**
**सत्य का असर समाचार पत्र**

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में दि. 05.6.2024 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संस्थान कर्मियों द्वारा प्रकृति से निःशुल्क रूप से प्रदत्त पर्यावरण के प्रमुख संघटक पेड़ों के संरक्षण और संवर्धन का संकल्प लेते हुये संस्थान की निदेशक,प्रो. (डॉक्टर) सीमा परोहा की अगुआई में व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण किया गया। प्रो. सीमा परोहा ने बताया कि संस्थान परिसर में जिन स्थानों पर पेड़ों की मात्रा कम है उनको चिन्हित कर लिया गया है और मानसून से पूर्व वहां पर वृहद रूप से पेड़ लगाना हमारी प्राथमिकता है। वृक्षारोपण के लिये विभिन्न प्रजातियों के पेड़ डॉ.लोकेश बाबर, कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि रसायन) द्वारा उपलब्ध करवाये गये। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर स्पेंटवाश ड्राई और पोटाश डिराइव्ड मोलासेस इकाई का उद्घाटन करते हुये प्रो. सीमा परोहा ने कहा कि देश में उर्वरकों की खपत अधिक और उत्पादन बहुत कम है। भारत में सालाना उपयोग किये जाने वाले उर्वरक की मात्रा वैश्विक उपयोग का केवल 16.1 % है। देश के किसानों को प्रमुख पोषक तत्वों की कमी यथा-नाइट्रोजन 25%, फास्फोरस 90% और पोटैशियम का 100% आयात करना पड़ता है। जिसमें बहुमूल्य विदेशी मुद्रा व्यय होती है। हम विश्व में सबसे बड़े उर्वरक आयातक हैं। भारत सरकार किसानों के लिये उर्वरकों की दर कम रखने के लिये बड़ी मात्रा में सब्सिडी प्रदान करती है। वित्तीय वर्ष 2023-24 मेंये सब्सिडी प्रदान करती हैत सरकार किसानों के लिये उर् यवल 16.1 किसानों की उर्वरकों की मांग को पूरा करने के लिये सरकार ने उर्वरक

इकाई की कार्यप्रणाली पर विस्तृत प्रकाश डालते हुयेकार्यप्रणाली पर विस्तृत प्रकाश डोलपेड डॉ.लोकेश बाबर, कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि रसायन) द्वारा उपलब्ध करवाये गये डॉ.अशोक यादव, सहायक आचार्य कृषि रसायन ने कहा कि पोषक तत्वों से भरपूर स्पेंटवाश ड्राई पावडर, पोटाश डिराइव्ड मोलासेस एवं सी.बी.जी. (कंप्रेस्ड बायो गैस) बनने के उपरांत प्राप्त द्रव खाद (LM) व फर्मेंटेड आर्गेनिक खाद (FOM) के अन्य आवश्यक पोषक तत्वों को मिलाकर आवश्यकतानुसारउर्वरक तैयार करने की प्रायोगिक इकाई की स्थापना से उर्वरक उत्पादन के नये अवसर तैयार होंगें। इस प्रक्रिया में जैविक रूप से रसायन रहित वर्मी कंपोस्ट एवं कंपोस्ट का भी उत्पादन संभव होगा। संस्थान में विभिन्न चरणों में परीक्षण के उपरांत इन उर्वरकों का संस्थान के फार्म हाउस में परीक्षण होगा। इसके पश्चात विस्तृत रूप से किसानों के इस्तेमाल हेतु फैक्ट्रियों को तकनीक स्थानांतरित की जायेगी। यह कार्य उर्वरकों के क्षेत्र में गेम चेंजर होगा और इससे उर्वरकों की गुणवत्ता बढ़ेगी और लागत में कमी आयेगी। निदेशक महोदया ने बताया कि भविष्य में हमारी योजनामृदा परीक्षण के उपरांत उसमें जिस पोषक तत्व की कमी होगी उसके अनुरूप जैविक खाद तैयर करने की भी है। चीनी मिलों से तैयार स्पेंटाश ड्राई, पोटाश डिराइव्ड मोलासेस और सी.बी.जी. से तैयार उत्पाद आत्मनिर्भर भारत की ओर एक महत्वाकांक्षी कदम है जो किसान भाइयों को कम लागत में अधिक पोषक तत्वों के प्रयोग को बढ़ावा देता है। इस दिशा में चीनी मिलों से संस्थान को कई प्रोजेक्ट मिले हैं जिन पर तेजी से कार्य हो रहा है। इसके पूर्ण होने पर चीनी मिलों को भी अतिरिक्त राजस्व की प्राप्ति होगी।वक्ताओं और श्रोताओं का आभार प्रकट करते हुये श्रीमती मल्लिका द्विवेदी, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने सभी को सेमीनार में भागीदारी के लिये धन्यवाद ज्ञापित किया अखिलेश

## शहर दायरा न्यूज़

# राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की निदेशक डॉ सीमा परोहा की अगुवाई में हुआ वृहद वृक्षारोपण का आयोजन

शहर दायरा न्यूज

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संस्थान कर्मियों द्वारा प्रकृति से निःशुल्क रूप से प्रदत्त पर्यावरण के प्रमुख संघटक पेड़ों के संरक्षण और संवर्धन का संकल्प लेते हुए संस्थान की निदेशक प्रोफेसर डॉक्टर सीमा परोहा की अगुवाई में व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण किया गया प्रोफेसर सीमा परोहा ने बताया कि संस्थान परिसर में जिन स्थानों पर पेड़ों की मात्रा कम है उनको चिन्हित कर लिया गया है और मानसून से पूर्व वहां पर वृहद रूप से पेड लगाना हमारी प्राथमिकता है वृक्षारोपण के लिये विभिन्न प्रजातियों के पेड़ डॉ लोकेश बाबर, कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी कृषि रसायन द्वारा उपलब्ध करवाये गये विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर स्पेंटवाश ड्राई और पोटाश डिराइव्ड मोलासेस इकाई का उद्घाटन करते हुये प्रो. सीमा परोहा ने कहा कि देश में उर्वरकों की खपत अधिक और उत्पादन बहुत कम है भारत में सालाना उपयोग किये जाने वाले उर्वरक की मात्रा वैश्विक उपयोग का केवल 16.1 त्र है देश के किसानों को प्रमुख पोषक तत्वों की कमी यथा- नाइट्रोजन 25त्र, फास्फोरस 90त्र और पोटैशियम का 100त्र आयात करना पड़ता है जिसमें बहुमूल्य विदेशी मुद्रा व्यय होती है हम विश्व में सबसे बड़े उर्वरक आयातक हैं भारत सरकार किसानों के लिये उर्वरकों की दर कम रखने के लिये बड़ी मात्रा में सब्सिडी प्रदान करती है वित्तीय वर्ष 2023-24 मेंये सब्सिडी प्रदान करती हैत सरकार किसानों के लिये 16.1 किसानों की उर्वरकों की मांग को पूरा करने के लिये सरकार ने उर्वरक सब्सिडी के लिये लगभग 21.5 बिलियन डॉलर रूपये आवंटित किये थे

इकाई की कार्यप्रणाली पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए कार्य-प्रणाली पर विस्तृत प्रकाश डाला, डॉ.लोकेश बाबर, कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि रसायन) द्वारा उपलब्ध करवाये गये डॉ.अशोक यादव, सहायक आचार्य कृषि रसायन ने कहा कि पोषक तत्वों से भरपूर स्पेंट वाश ड्राई पावडर, पोटाश डिराइव्ड मोला सेस एवं सीबीजी (कंप्रेस्ड बायो गैस) बनने के उपरांत प्राप्त द्रव खाद व फर्मेंटेड आर्गेनिक खाद के अन्य आवश्यक पोषक तत्वों को मिलाकर आवश्यकता अनुसार उर्वरक तैयार करने की प्रायोगिक इकाई की स्थापना से उर्वरक उत्पादन के नये अवसर तैयार होंगें इस प्रक्रिया में जैविक रूप से रसायन रहित वर्मी कंपोस्ट एवं कंपोस्ट का भी उत्पादन संभव होगा संस्थान में विभिन्न चरणों में परीक्षण के उपरांत इन उर्वरकों का संस्थान के फार्म हाउस में परीक्षण होगा इसके पश्चात विस्तृत रूप से किसानों के इस्तेमाल हेतु फैक्ट्रियों को तकनीक स्थानांतरित की जायेगी यह कार्य उर्वरकों के क्षेत्र में गेम चेंजर होगा और इससे उर्वरकों की गुणवत्ता बढ़ेगी और लागत में कमी आयेगी निदेशक ने बताया कि भविष्य में हमारी योजना मृदा परीक्षण के उपरांत उसमें जिस पोषक तत्व की कमी होगी उसके अनुरूप जैविक खाद तैयार करने की भी है चीनी मिलों से तैयार स्पेंटाश ड्राई, पोटाश डिराइव्ड मोलासेस और सीबीजी से तैयार उत्पाद आत्मनिर्भर भारत की ओर एक महत्वाकांक्षी कदम है जो किसान भाइयों को कम लागत में अधिक पोषक तत्वों के प्रयोग को बढ़ावा देता है। इस दिशा में चीनी मिलों से संस्थान को कई प्रोजेक्ट मिले हैं जिन पर तेजी से कार्य हो रहा है इसके पूर्ण होने पर चीनी मिलों को भी अतिरिक्त राजस्व की प्राप्ति होगी वक्ताओं और श्रोताओं का आभार प्रकट करते हुए मल्लिका द्विवेदी, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने सभी को सेमीनार में भागीदारी के लिये धन्यवाद ज्ञापित किया

## अमर उजाला

# चीनी मिलों के अपशिष्ट से बनेगी खाद

माई सिटी रिपोर्टर

### एनएसआई में ग्रीन एनर्जी कम्पोस्ट प्रोडक्शन यूनिट शुरु

### जैविक रूप से बर्मी कम्पोस्ट व कम्पोस्ट का होगा उत्पादन

कानपुर। चीनी मिलों और डिस्टिलरियों से निकलने वाले अपशिष्टों से पौष्टिक खाद बनाई जाएगी। इससे भूमि की उर्वरकता बढ़ेगी। बुधवार को एनएसआई की निदेशक डॉ. सीमा परोहा ने ग्रीन एनर्जी कम्पोस्ट प्रोडक्शन यूनिट का उदघाटन किया।

उन्होंने बताया कि इस विधि से जैविक रूप से बर्मी कम्पोस्ट एवं कम्पोस्ट का भी उत्पादन संभव होगा। इसमें किसी प्रकार का रसायन नहीं होगा। इसके अलावा पेड़ों के पत्तों से भी खाद बन जाएगी। अभी देश में उर्वरकों की खपत अधिक और उत्पादन कम है। पर्यावरण दिवस पर एनएसआई में पेड़ों के संरक्षण और संवर्धन का संकल्प लिया गया। परिसर में पौधरोपण किया गया।

सहायक आचार्य (कृषि रसायन) डॉ. अशोक यादव ने बताया कि प्रायोगिक इकाई की स्थापना से उर्वरक उत्पादन के नए अवसर तैयार होंगे। संस्थान में विभिन्न चरणों में परीक्षण के बाद इन उर्वरकों का संस्थान के फार्म हाउस में परीक्षण होगा। इस दौरान पौधरोपण भी किया गया।

**The Indian Express**

Vaibhav, bollywood dance of Shagun, Yashwant and Kartik and songs of Nandkishore, Aman received cheers.

**NSI Kanpur organizes tree plantation on World Environment Day**

On the occasion of World Environment Day on June 5, 2024, at the National Sugar Institute in Kanpur, extensive tree plantation was carried out under the leadership of the Institute's Director, Prof. (Dr.) Seema Paroha. Prof. Seema Paroha mentioned that areas within the institute's campus with fewer trees have been identified, and planting trees on a large scale in these areas before the monsoon is our priority. Various species of trees were provided for plantation by Dr. Lokesh Babar, Junior Scientific Officer (Agricultural Chemistry). Expressing gratitude to the speakers and audience, Mallika Dwivedi, Assistant Director (OL), thanked everyone for their participation in the program.

THE INDIAN EXPRESS, SATURDAY, JUNE 8, 2024

## Digital News

- प्रो. सीमा परोहा ने बताया कि संस्थान परिसर में जिन स्थानों पर पेड़ों की मात्रा कम है
- कानपुर में जगह-जगह पर्यावरण दिवस का हुआ आयोजन: संस्थानों में पौधा लगा जीवन भर रक्षा करने की ली शपथ